

Reg No 177/2008-2009

ISSN: 2322-0317

PSSH PERSPECTIVE *of*
SOCIAL SCIENCES
and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 2010

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

जनसंख्या में वृद्धि तथा पर्यावरण अवनयन

डॉ० आमोद धर द्विवेदी¹

जनसंख्या एक संसाधन है, जो प्राकृतिक उपहारों को आर्थिक संसाधनों में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है। स्व-शिक्षित व तकनीकी रूप से दक्ष मानव संसाधन के द्वारा आर्थिक-संसाधनों को अधिक मूल्यवान बनाया जा सकता है। किसी प्रदेश में जनसंख्या का आकार सामाजिक-आर्थिक स्थिति व संसाधनों के वृद्धि के द्वारा निर्धारित होती है। जब जनसंख्या की वृद्धि दर संसाधनों की वृद्धि दर की तुलना के अधिक होती है तो उसे जनसंख्या विस्फोट की स्थिति कहा जाता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री नोटेस्टीन व थॉम्पसन ने जनसंख्या में 2 प्रतिशत से अधिक वार्षिक वृद्धि दर को जनसंख्या विस्फोट की अवस्था कहा है।

किसी भी प्रदेश, देश या क्षेत्र के भौतिक पर्यावरण के एकल या कई संघटकों में उत्पन्न अवनतावस्था को पर्यावरण अवनयन या पर्यावरण अवक्रमण (Environmental Degradation) कहते हैं।

पर्यावरण अवनयन एवं पारिस्थितिकीय असन्तुलन का मूल कारण मानव जनसंख्या में वृद्धि है क्योंकि कृषि में विस्तार, नगरीकरण, औद्योगिकरण इत्यादि बढ़ते मानव समुदाय मानव के ही प्रतिफल हैं। जनसंख्या वृद्धि होने के कारण सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जिस कारण प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध विदोहन के कारण अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। जनसंख्या के कुछ पक्षों एवं प्रवृत्तियों का उल्लेख करना आवश्यक है।

प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक विश्व जनसंख्या में इतनी तीव्र गति से वृद्धि हुई है, परिणाम स्वरूप विश्व जनसंख्या के दोगुना होने की अवधि निरन्तर कम होती रही है। 8000 ई०पू० (विश्व जनसंख्या अनुमानतः 5 मिलियन) से 1650 ई० के मध्य विश्व जनसंख्या लगभग प्रतिभग प्रति 1500 वर्षों में दोगुनी हो गयी। वास्तव में 8000 ई०पू० 1650 ई० के मध्य अनुमति विश्व जनसंख्या 50 मिलियन हो गयी। 1850 ई० के बाद विश्व की जनसंख्या मात्र 80 वर्षों (1930 ई० तक) में ही दोगुनी (2000 मिलियन) हो गयी। 1930 से 1975 ई० के बीच (45 वर्षों में) विश्व जनसंख्या पुनः दोगुनी (4000 मिलियन) हो गयी। आशा की जाती है कि यदि विश्व जनसंख्या की वर्तमान वृद्धि दर कायम रही तो यह मात्र 36 वर्षों में ही (2015 ई० तक) पुनः दोगुनी (8000 मिलियन) हो जायेगी (Kamla Gupta 1983)।

¹ प्रवक्ता (भूगोल विभाग) बाबू तुफानी सिंह महाविद्यालय, चन्दौली

तालिका-1

अनुमानित विश्व जनसंख्या

वर्ष	विश्व जनसंख्या (मिलियन में)	वर्ष	विश्व जनसंख्या (मिलियन में)
8000 ई०पू०	5	1930	2,070
14 ई०	256	1940	2,295
350	254	1950	2,513
600	237	1955	2,745
800	267	1960	3,027
1000	280	1965	3,344
1200	384	1970	3,678
1340	378	1975	4,033
1500	427	1980	4,415
1650	470	1985	4,830
1750	694	1990	5,275
1800	919	1995	5,733
1850	1,091	2000	6,199
1900	1,571	2005	6665
1920	1,811	2010	7132

स्रोत : 8000 ई०पू० से 14 ई० अनुमान : 1500 से 1600 ई-

C. Clarke, 1967; 1960 से 1910 ई०- United Nations Department of Economic and Social Affairs, Population Division, 1983: ई०- U.N. Demographic year Book, 1962; 1930 तथा 1940 ई०- U.N. Demographic year Book, 1969 तथा 1950 से 2010 ई०- Summary Report of the 1978 Assessment (United Nations Publications). ST/ESA/SER.R/33).

तालिका-1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि विश्व जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर 1950 तक मन्द रही विश्व जबकि जनसंख्या में 1950 से 0.8 प्रतिशत की दर से वार्षिक वृद्धि होती रही। 1955-1965 के बीच जनसंख्या की वृद्धि दर सर्वाधिक रही (2.0 प्रतिशत प्रतिवर्ष) जबकि विश्व जनसंख्या में 600 मिलियन की कुल वृद्धि हुई। जो कि यह वृद्धि 1700 ई० तक विश्व की सकल जनसंख्या के बराबर थी। विश्व जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर को देखने से स्पष्ट होता है कि (तालिका 2) 1965-70ई० (1.9 प्रतिशत प्रतिवर्ष) तथा 1955-2000 ई० (1.6 प्रतिशत प्रति वर्ष) में जनसंख्या की प्रवृत्ति में ह्रास हुआ है। 2000-2005 ई० (1.6 प्रतिशत प्रति वर्ष) एवं 2005-2010 ई० में 1.5 प्रतिशत प्रति वर्ष ह्रास की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होता है।

तालिका-2

विश्व जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)

वर्ष-अवधि	विश्व	विकसित प्रदेश	विकासशील देश
1900-50	0.8	0.8	0.9
1950-55	1.8	1.3	2.0

1955-60	2.0	1.3	2.3
1960-65	2.0	1.2	2.4
1965-70	1.9	0.9	2.3
1970-75	1.8	0.8	2.2
1975-80	1.8	0.7	2.2
1980-85	1.8	0.7	2.2
1985-90	1.8	0.6	2.1
1990-95	1.7	0.6	2.0
1995-2000	1.6	0.5	1.8
2000-2005	1.6	0.5	1.7
2005-2010	1.5	0.4	1.7

विकसित प्रदेश— उत्तरी अमेरिका, जापान, यूरोप, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तथा पूर्व सोवियत रूस।

विकासशील प्रदेश— अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, चीन, पूर्वी एशिया, दक्षिणी एशिया, मलेशिया, मलेनेशिया, माइक्रोनेशिया तथा पोलीनेशिया।

स्रोत: World population Trends and Prospects by Country, 1950-2010, Summary Report of the 1978 Assessment (U.N. Publications, ST/ESA/SER,R/33)

विश्व में जनसंख्या के स्थानिक वितरण में पर्याप्त विभिन्नता पायी जाती है। जनसंख्या का सर्वाधिक सान्द्रण महानगरों, मेगालोपोलिस तथा विकासशील देशों में पाया जाता है। तालिका-3 से स्पष्ट होता है कि 1950 में विश्व की सकल जनसंख्या का 70 प्रतिशत विकासशील देशों में केन्द्रित था, जो 1975 में बढ़कर 72.9 प्रतिशत हो गया। यह अनुमान किया गया कि 2015 ई० विश्व की सकल जनसंख्या का 79 प्रतिशत भाग विकासशील देशों में होगा। तालिका-3 से स्पष्ट होता है कि 1965 के बाद से विकसित प्रदेशों में जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर में लगातार गिरावट आयी है जबकि विकासशील प्रदेशों में लगभग स्थिर रही है। विश्व जनसंख्या के इस असमान वितरण के कारण कुछ क्षेत्रों में अधिक जनसंख्या के कारण वहां के प्राकृतिक संसाधनों पर अधिक भार होने से पर्यावरण में अवनयन अधिक हुआ है। इसी तरह विकासशील देशों के नगरीय केन्द्रों में जनसंख्या के सान्द्रण में तेजी से वृद्धि होने के कारण मलिन बस्तियों (Slums) का अविर्भाव हो रहा है जिसमें पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण में वृद्धि हो रही है।

तालिका-3

विश्व जनसंख्या का असमान वितरण (मिलियन में)

वर्ष	विश्व	विकसित प्रदेश	विकासशील प्रदेश
1950	2,513	832	1,681
1955	2,745	887	1,858
1960	3,027	945	2,082

1965	3,344	1,003	2,341
1970	3,678	1,050	2,628
1975	4,033	1,093	2,940
1980	4,415	1,131	3,284
1985	4,830	1,169	3,661
1990	5,275	1,206	4,069
1995	5,733	1,240	4,493
2000	6,199	1,272	4,926
2005	6,665	1,304	5,361
2010	7,132	1,336	5,796

स्रोत: World population Trends and Prospects by Country, 1950-2010, Summary Report of the 1978 Assessment (U.N. Publications, ST/ESA/SER,R/33)

तलिका-4

विश्व जनसंख्या का प्रक्षेपण (बिलियन में)

वर्ष	निम्न उत्पादकता पर (प्रति महिला एक बच्चा) विश्व की जनसंख्या	मध्यम उत्पादकता (प्रति महिला दो बच्चे) पर विश्व की जनसंख्या	उच्च उत्पादकता (प्रति महिला 3 बच्चे) पर विश्व की जनसंख्या
2050	7.7	9.4	11.2
2100	5.6	10.4	17.5
2150	3.6	10.8	27.0
2200	—	11.0	—

स्रोत: Population Division of the U.N. Economic and Social Affairs Department, 1998.

तलिका-5

जनसंख्या में भावी वृद्धि (1995-2050) का प्रादेशिक प्रारूप

प्रदेश	1995 में जनसंख्या (बिलियन में)	2050 में जनसंख्या (बिलियन में)
अफ्रीका	0.7	2.8
चीन	1.2	1.6
भारत	0.9	1.7
एशिया के अन्य भाग	1.3	2.8
लैटिन अमेरिका तथा कैरेबियन प्रदेश	0.477	0.916
यूरोप	0.728	0.595
संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा	0.297	0.424

स्रोत: Population by Population Division of the U.N. Economic and Social Affairs Department, 1998

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि जनसंख्या से सम्बन्धित पर्यावरण अवनयन के निम्नलिखित मूल कारण हैं:

- विश्व की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि।
- नगरों में विस्तार तथा नगरों में जनसंख्या के सान्द्रण में सतत वृद्धि।
- विश्व के विकसित एवं विकासशील देशों की जनसंख्या में तीव्रगति से बढ़ता अन्तराल।
- नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि।
- स्पष्ट है कि पर्यावरण अवनयन की रोकथाम एवं पर्यावरण की गुणवत्ता को सुधारने के लिये यह आवश्यक है कि जनसंख्या की वृद्धि पर रोक लगायी जाय।

निष्कर्ष

जनसंख्या में वृद्धि तथा पर्यावरणीय अवनयन के लिए जिम्मेदार प्रक्रमों एवं कारणों से भावी जीवन के प्रति निराशा जागृत होती है तथा यह भी आभास होता है कि सभी विकासीय कार्य प्रकृति तथा पर्यावरण के विपरित है। यदि हमें वर्तमान समाज को विकसित करना है तथा बढ़ती जनसंख्या की मांगों को पूरा करना है तो विकास की गति को बनाये रखना होगा परन्तु विकास कार्य पर्यावरण समुदाय की अस्तित्व की कीमत पर नहीं किया जाना चाहिए। यदि देखा जाय तो पर्यावरण अवनयन का मूल कारण जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि ही है। अतः पर्यावरण अवनयन को रोकने के लिए सर्वप्रथम जनसंख्या की वृद्धि को नियंत्रित करना होगा। पर्यावरण अवनयन की समस्या के निदान के लिए निम्न उपायों को अमल में लाना आवश्यक होगा:

- प्रदूषण मुक्त प्रौद्योगिकी का विकास।
- प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध विदोहन पर नियन्त्रण।
- वन-विनाश से प्रभावित क्षेत्रों तथा अन्य बंजर भूमियों पर बड़े पैमाने पर वन रोपण।
- रासायनिक खादों, कीटनाशक एवं शाकनाशी रसायनों के प्रयोग पर नियन्त्रण।
- अवनलिका अपरदन से प्रभावित कृषि भूमियों का सुधार तथा संरक्षण।
- ओजोन (O₃) को नष्ट करने वाले रसायनों (क्लोफ्लोरो कार्बन तथा हैलन) के उत्पादन एवं उपभोग में भारी कमी।

- वायुमण्डल में हरितग्रह प्रभाव को कम करने के लिए जीवाश्म ईंधनों के उपभोग में कमी तथा नियन्त्रण।
- नाभिकीय शस्त्रों के उत्पादन पर पूर्ण रोक। आम जनता को पर्यावरण के प्रति शिक्षित एवं जागरूक करना आदि।

सन्दर्भ

1. Gupta, H.K. 1976: Dams and Earthquakes, Elsevier, Amsterdam.
2. Clark K.C. 1967: 1650-1910- United Nation Department of Economic and Socio Affairs, Population Division.
3. सिंह, सविन्द्र, 2001, पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. राव, वी०पी० श्रीवास्तव वी०के०, पर्यावरण और परिस्थितिकी, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
5. कौशिक, एस०डी०, मानव भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, शिवाजी रोड मेरठ।
6. U.N. Demographic year Book, 1962, 1930, 1940, 1969 and 1950-2000.
7. Summary Report of the 1978 Assessment (United Nation Publications), ST/ESA/SER,R/33.
8. World Population Trends and Prospects by Country, 1950-2005 Summary Report of the 1978. Assessment (U.N. Publications. ST/ESA/SEA.R/33).